

**सप्तभंगी स्त्री.** (तत्.) जैन न्याय के प्रसिद्ध सात मुख्य अंग जिन पर उनका स्याद्वाद का सिद्धांत आधारित है, सातभंग इस प्रकार हैं 1. स्यात् है 2. स्यात् नहीं है 3. स्यात् है और नहीं है 4. स्यात् अव्यक्त है (वाणी का अ विषय) 5. स्यात् है और स्यात् अवक्तव्य है 6. स्यात् नहीं है और स्यात् अवक्तव्य है 7. स्यात् है और स्यात् नहीं है तथा स्यात् अवक्तव्य हो।

**सप्तत्रिंश वि.** (तत्.) सैंतीसवाँ

**सप्तभुज पुं.** (तत्.) ज्यामिति में सात भुजाओं वाला क्षेत्र।

**सप्तभुवन पुं.** (तत्.) सात लोक पृथ्वी और उसके ऊपर के लोक जैसे- 1. भूलोक 2. भुवलोक 3. स्वर्लोक 4. महर्लोक 5. जनलोक 6. तपोलोक 7. सत्यलोक टि. इन्हें क्रमशः भूः भुवः स्वः, महः, जनः, तपः सत्यम करते हैं।

**सप्तभूम वि.** (तत्.) जो सात-खंडों का हो, सप्तमंजिला।

**सप्तभूमिक वि.** (तत्.) जिसमें सात मंजिले खंड हो (सप्तमंजिला मकान)।

**सप्तभु पुं.** (तत्.) ज्यामिति में प्रयुक्त की जाने वाली सात भुजाओं वाली एक आकृति।

**सप्तम वि.** (तत्.) सप्तमी-सातवीं।

**सप्तमरुत पुं.** (तत्.) दे. सप्तपवन।

**सप्तमातृका स्त्री.** (तत्.) सात माताएँ या देवियाँ जिनकी हिंदू धर्मावलंबी विवाह आदि शुभ मांगलिक कार्यों में पूजा करते हैं, सप्तमातृकाओं के नाम इस प्रकार हैं- ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी और चामुंडा।

**सप्तमी स्त्री.** (तत्.) 1. चांद्रमास के शुक्ल या कृष्ण पक्ष की सातवीं तिथि, सातवां दिन 2. व्या. अधिकरण कारक की सप्तमी विभक्ति।

**सप्तमृत्तिका स्त्री.** (तत्.) किसी अनुष्ठान या शांति कर्म में काम आने वाली सातस्थानों की मिट्टी, जिसे अत्यंत पवित्र या शुभ माना जाता है, सात स्थानों की मिट्टी जैसे- गोशाला, गजशाला

अश्वशाला, राजद्वार, नदी संगम, सरोवर, या कुंड, साँप की बाँबी।

**सप्तरक्त पुं.** (तत्.) शरीर के सात अंग/अवयव जिनका रंग लाल होता है जैसे- हथेली, तलवा, जीभ, अँखकी कोट, जीभ, तालु और होंठ।

**सप्तरात्र वि.** (तत्.) सात रातों का समय, सात रातों में सम्पन्न होने वाला।

**सप्तरात्रक वि.** (तत्.) सात रातों तक चलने वाला (कोई उत्सव)।

**सप्तराशिक पुं.** (तत्.) गणित की वह प्रक्रिया जिसमें सातराशियों के आधार पर किसी प्रश्न का उत्तर या समाधान निकाला जाता है।

**सप्तरुचि पुं.** (तत्.) अग्नि का एक नाम।

**सप्तर्षि पुं.** (तत्.) सात ऋषियों का मंडल जो प्राचीनकाल में विविध धार्मिक सामाजिक आदि विषयों में मार्ग दर्शन करता था, सप्तर्षिमंडल टि. विभिन्न युगों में सप्तर्षियों के नामों में अन्तर मिलता है, बहुत पहले प्राचीन काल में सप्त-ऋषियों के नाम इस प्रकार पाए जाते हैं 1. मरीचि, अग्नि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ खगो. आकाश में उत्तर दिशा में देदीप्यमान सात तारों या नक्षत्रों का समूह जो ध्रुव तारे की परिक्रमा करता रहता है, सप्तर्षि मंडल।

**सप्तला स्त्री.** (तत्.) 1. सातला 2. चमेली 3. घुँघची 4. रीठा।

**सप्तवन पुं.** (तत्.) सात प्रकार की वायु, पवन के सात भेद जैसे- प्रवह, आवह, उद्वह, संवह, विवह, निवह तथा परिवह टि. उक्त प्रत्येक के सात-सात भेद होने से कुल 49 प्रकार के पवन कहे गए हैं।

**सप्तवादी पुं.** (तत्.) सप्तभंगी न्याय का अनुयायी, जैन धर्मावलंबी व्यक्ति।

**सप्तवायु पुं.** (तत्.) सात प्रकार की वायु या वायु के सात प्रकार दे. सप्तपवन।

**सप्तवाह्य पुं.** (तत्.) वाल्हीक देश, बलख।